1. परिचय: उद्देश्यपूर्ण छुटकारा

इस्राएलियों का मिस्र से कनान की ओर निकलना केवल ऐतिहासिक घटना नहीं थी, बल्कि यह यीशु मसीह के उद्धारक कार्य का एक धार्मिक खाका (theological blueprint) है। परमेश्वर ने इस्राएल को फ़िरौन की दासता से मुक्त किया; और मसीह में हमें पाप की आत्मिक दासता से मुक्त किया गया है (यूहन्ना 8:34–36)। मूसा, जिसने इस्राएल को छुड़ाया, मसीह का प्रतीक है, जिसने क्रूस और पुनरुत्थान के द्वारा सम्पूर्ण मानवजाति को छुड़ाया।

“क्योंकि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई; परन्तु अनुग्रह
और सत्य यीशु मसीह के द्वारा पहुँचा।” (यूहन्ना 1:17)

जैसे परमेश्वर ने मूसा के द्वारा चमत्कारों और अद्भुत कार्यों से अपने लोगों को छुड़ाया, वैसे ही मसीह की सेवकाई महान चिन्हों और उद्धारक चमत्कारों से चिह्नित हुई (इब्रानियों 3:3)।

2. परमेश्वर ने इस्राएल को क्यों छुड़ाया?

फ़िरौन और मूसा के बीच के टकराव में बार-बार आने वाले वाक्य पर ध्यान दीजिए:

“मेरे लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें”

“तब यहोवा ने मूसा से कहा, फ़िरौन के पास जा और उससे कह, ‘यहोवा यों कहता है, मेरे लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें।’” (निर्गमन 8:1)

“फिर यहोवा ने मूसा से कहा, भोर को जल्दी उठकर फ़िरौन के सामने खड़ा हो, और उससे कह, ‘इब्रानियों का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मेरे लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें।’” (निर्गमन 9:13)

“तब मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए और उससे कहा,
‘इब्रानियों का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, तू कब तक अपने
आप को मेरे सामने दीन करने से इन्कार करता रहेगा? मेरे
लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें।’” (निर्गमन 10:3)

मुख्य कारण केवल दासता से छुटकारा नहीं था, बल्कि परमेश्वर की उपासना और सेवा के लिए स्वतंत्रता थी। परमेश्वर ने उन्हें मुक्त किया ताकि वे वाचा में प्रवेश करें, उसकी व्यवस्था प्राप्त करें और उसकी विश्वासयोग्यता से सेवा करें।

3. एक स्वामी से दूसरे स्वामी तक

“मेरे लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें”

नए नियम में पौलुस इस विषय को आगे बढ़ाते हैं:

“क्या तुम नहीं जानते कि जिसको तुम अपने आप को दास करके
आज्ञा मानने को सौंपते हो, उसी के दास हो… परन्तु परमेश्वर
का धन्यवाद हो कि तुम पाप के दास थे, तौभी जिस उपदेश के रूप
में तुम्हें सौंपा गया, तुमने मन से उस पर चलना मान लिया। और
पाप से मुक्त होकर धार्मिकता के दास बन गए।” (रोमियों
6:16–18)

यहाँ पौलुस सिखाते हैं कि उद्धार केवल पाप से छुटकारा ही नहीं, बल्कि धार्मिक आज्ञाकारिता में प्रवेश भी है।

“हे भाइयों, तुम स्वतंत्र होने के लिए बुलाए गए हो; केवल
अपनी स्वतंत्रता को शरीर की अभिलाषा का अवसर न बनने दो,
परन्तु प्रेम से एक-दूसरे की सेवा करो।” (गलातियों 5:13)

मसीही स्वतंत्रता पाप करने की अनुमति नहीं, बल्कि परमेश्वर और दूसरों की प्रेमपूर्वक सेवा का निमंत्रण है।

“मेरे लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें”

4. आज हम परमेश्वर की सेवा कैसे करें?

a) उसकी आज्ञाओं का पालन करके

आज्ञाकारिता उपासना और सेवा का पहला कार्य है। यीशु ने कहा: “यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।” (यूहन्ना 14:15)

परमेश्वर केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति से प्रसन्न नहीं होता, बल्कि पवित्र आज्ञाकारिता के जीवन से होता है।
“पर वचन के केवल सुनने वाले ही नहीं, वरन् उस पर चलने वाले भी बनो, और अपने आप को धोखा मत दो।” (याकूब 1:22)

b) दूसरों को उसका अनुसरण करना सिखाकर

यीशु ने हर विश्वासी को महान आदेश दिया:
“इसलिए तुम जाकर सब जातियों को चेला बनाओ, और उन्हें… यह सिखाओ कि वे सब बातें मानें, जिनकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी है।” (मत्ती 28:19–20)

परमेश्वर की सेवा में दूसरों को सत्य बताना शामिल है—चाहे वह प्रचार हो, शिक्षा देना हो, पालन-पोषण करना हो, या रोज़मर्रा की

बातचीत।

“और जो बातें तू ने मुझ से बहुत गवाहों के साम्हने सुनी हैं, उन्हें विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने के योग्य होंगे।” (2 तीमुथियुस 2:2)

5. हमें उपासना के लिए छुड़ाया गया

जब इस्राएली मिस्र से निकले, तो उनका पहला पड़ाव सीनै पर्वत था, जहाँ उन्होंने व्यवस्था पाई (निर्गमन 19–20)। उनकी पहचान एक पवित्र राष्ट्र और याजकों का राज्य (निर्गमन 19:6) के रूप में वाचा और उपासना से शुरू हुई, न कि कनान में प्रवेश से।

उसी प्रकार, उद्धार पाने के बाद हमें पवित्र आत्मा दिया गया है, ताकि हम पवित्र जीवन जी सकें और दूसरों को गवाही दे सकें।

“परन्तु तुम एक चुनी हुई जाति, राजकीय याजकता, पवित्र
राष्ट्र हो… कि तुम उसके गुण प्रगट करो, जिसने तुम्हें अन्धकार से अपनी अद्भुत ज्योति में बुला लिया है।” (1 पतरस 2:9)

6. अन्तिम बुलाहट: अपने छुटकारे को जीओ

तुम्हें उद्धार इसलिए नहीं मिला कि तुम स्वयं, अपने करियर या संसार की सेवा करो, बल्कि ताकि तुम अपने जीवन से प्रभु की सेवा करो।

“और जो कुछ करते हो, तन मन से करो, मानो प्रभु के लिये करते
हो, न कि मनुष्यों के लिये… क्योंकि तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो।” (कुलुस्सियों 3:23–24)

निष्कर्ष: अपनी स्वतंत्रता के उद्देश्य को पूरा करो

परमेश्वर ने तुम्हें पाप से इसलिए नहीं छुड़ाया कि तुम निष्क्रिय हो जाओ। तुम्हें सेवा करने के लिए छुड़ाया गया—पवित्रता, आज्ञाकारिता, प्रेम और गवाही में। जैसे इस्राएल को व्यवस्था दी गई और आने वाली पीढ़ियों को सिखाने का आदेश दिया गया, वैसे ही तुम्हें भी सुसमाचार के सत्य को जीने और सिखाने का आदेश दिया गया है।

“मेरे लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें”

“जिसने अपने आप को हमारे लिये दे दिया, कि हमें सब अधर्म से छुड़ाए, और अपने लिये एक विशेष प्रजा को शुद्ध करे, जो भले
कामों में उत्सुक हो।” (तीतुस 2:14)

मरानाथा! — प्रभु शीघ्र आने वाले हैं। उन्हें सेवा करते हुए पाए जाएं।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp